हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल और कालीबंगा की मुख्य विशेषताएं

भाग-7

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

इन 5 प्रमुख हड़प्पा स्थलों के अतिरिक्त बनवाली, सुर कोतदा, रंगपुर, कोटदीजी, धौलावीरा भी प्रमुख हड़प्पा स्थल है.

बनवाली हरियाणा के हिसार जिले में स्थित पूरा स्थल है. इसकी खोज 1973 में आर एस विष्ट द्वारा की गई थी. यहां हड़प्पा पूर्व तथा हड़प्पा कालीन विशेषताएं प्राप्त होते हैं.

सुरकोटदा गुजरात के कच्छ जिले में स्थित पूरा स्थल है, जिसकी खोज 1964 में जगपति जोशी ने की थी. यहां से घोड़े की अस्थियां मिली है जो किसी भी अन्य हड़प्पा कालीन स्थल से प्राप्त नहीं हुई है.

रंगपुर गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित एक हड़प्पा पूरा स्थल है. इसकी खोज 1931 में एमएस वत्स ने की थी. यहां से धान की भूसी के ढेर, कच्ची ईंटों के दुर्ग, नालियां, मृदभांड इत्यादि प्राप्त हुए हैं.

कोटदीजी सिंध प्रांत के खैरपुर में स्थित पुरास्थल है, जिसकी खोज 1935 में धुर्रो ने की थी. 1955 से फजल अहमद खान ने इसके नियमित खुदाई कराई. इतिहासकारों का मानना है कि संभवत इसी स्थल से पाषाण युगीन सभ्यता का अंत तथा हड़प्पा सभ्यता का विकास हुआ.

धोलावीरा गुजरात के कच्छ जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरास्थल है, जिसकी खोज 1990-1991 में आर एस विष्ट ने की. धौलावीरा वर्तमान भारत में खोजे गए हड़प्पा कालीन दो विशालतम नगरों में से एक है. इस श्रेणी का दूसरा विशालतम नगर हरियाणा में स्थित राखीगढ़ी है.

धोलावीरा तीन प्रमुख भागों में विभाजित था जिसमें से 2 भाग आयताकार दुर्ग या प्राचीर द्वारा पूरी तरह सुरक्षित थे. ऐसी नगर योजना हड़प्पा कालीन अन्य नगरों में देखने को नहीं मिलती है.

इसके आलावा मुंडीगाक, मांडा, रोपड़, आलमगीरपुर आदि भी अन्य प्रमुख नगर है.

सिंधु घाटी सभ्यता एक महान सभ्यता थी इसकी योजना विशेषज्ञताएं समकालीन सभ्यता के मुकाबले अधिक उन्नत थी. इसकी जानकारी हमें संबंधित पुरास्थल के उत्खनन से मिलती है. हड़प्पा का विस्तार आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं भारत के वृहद क्षेत्र पर था| इस सभ्यता के बनने और ख़त्म होने की कहानी आज भी पहेली बनी हुई है|